Toppersnotes
Unleash the topper in you

Uttarakhand

Junior Assistant

Uttarakhand Subordinate Service Selection Commission (UKSSSC)

भाग - 1

सामान्य हिंदी

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	वर्तनी शुद्धि	1
2	वर्ण विचार	14
3	विराम चिन्ह	18
4	उपसर्ग	21
5	प्रत्यय	30
6	संज्ञा	38
7	सर्वनाम	40
8	विशेषण	41
9	क्रिया	42
10	लिंग	49
11	वचन	52
12	काल	53
13	कारक	55
14	तत्सम – तद्भव शब्द	58
15	देशज शब्द	60
16	वाक्य के लिए एक शब्द	64
17	अनेकार्थक शब्द	70
18	विलोम शब्द	73
19	पर्यायवाची	79
20	संधि	81
21	वाक्य विचार	97
22	अलंकार	105
23	मुहावरे	109

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	लोकोक्तियाँ	115
25	कार्यालयी एवं सरकारी पत्र	118

1 CHAPTER वर्तनी शुद्धि

वर्तनी के संदर्भ में हमें कुछ तथ्यों पर ध्यान रखना अनिवार्य होता है –

(क) शब्द के शुद्ध लेखन में किन–किन लिपि चिह्नों का प्रयोग होना चाहिए।

(ख) शब्द में प्रयुक्त विभिन्न लिपि चिह्नों को अनुकूल क्रम में प्रयोग करना।

हिन्दी वर्तनी के संदर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार अशुद्ध करना अनिवार्य है।

1. मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ

आ>अ	**अशुद्ध**	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
	अखांडनीय	अखंडनीय	अत्याधिक	अत्यधिक
	अनाधीकार	अनाधिकार	आजकाल	आजकल
	आपना	अपना	आधीन	अधीन
	आलौकिक	अलौकिक	दावात	दवात
	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप		
आ>अ	अगामी	आगामी	अदान–प्रदान	आदान–प्रदान
	अहार	आहार	चहिए	चाहिए
	नराज	नाराज	परलौकिक	पारलौकिक
	परिवारिक	पारिवारिक	संसारीक	सांसारीक
ई>इ	ईधर	इधर	उत्पत्ती	उत्पत्ति
	उन्नती	उन्नति	उपलब्धी	उपलब्धि
	कवी	कवि	क्योंकी	क्योंकि
	नालीयाँ	नालियाँ	पूर्ती	पूर्ति
	प्राप्ती	प्राप्ति	मुनी	मुनि
	व्यक्ती	व्यक्ति	शक्ती	शक्ति
	साथीयों	साथियों	हानी	हानि
इ>ई	अद्वितिय	अद्वितीय	आशिर्वाद	आशीर्वाद
	केन्द्रिय	केन्द्रीय	दिक्षा	दीक्षा
	दिवाली	दीवाली	निरसता	नीरसता
	निरिक्षण	निरीक्षण	पत्नि	पत्नी
	परिक्षा	परीक्षा	पितांबर	पीतांबर
	पूजनिय	पूजनीय	बिमार	बीमार
	बिमारी	बीमारी	श्रीमति	श्रीमती
ऊ>उ	अनूकूल	अनुकूल	आयु	आयु
	कृपालू	कृपालु	गुरू	गुरु
	दयालू	दयालु	धूलाइ	धुलाई
	पटू	पटु	परूष	पुरुष
	पशू	पशु	पुरूश	पुरुष
	प्रभू	प्रभु	मधू	मधु
	रूपया	रुपया	शिशू	शिशु
	शुरु	शुरू	साधू	साधु

Unleash the topper in you

उ>ऊ	उपर	ऊपर	टुर	टूर
	पुर्ण	पूर्ण	पुर्व	पूर्व
	पुज्य	पूज्य	मुली	मूली
	शुन्य	शून्य	सुप	सूप
	सुर्य	सूर्य	स्वरुप	स्वरूप

2. अकारण अनुनासिकता

रँण	रण	तँन	तन
खाँन	खान	पाँन	पान
तँम	तम	दाँम	दाम
राँम	राम		

3. अनुनासिकता (चंद्रबिन्दु)

आंख	आँख	ऊंचा	ऊँचा
कांच	काँच	गूंगा	गूँगा
चांद	चाँद	जहां	जहाँ
दांत	दाँत	बांस	बाँस
यहां	यहाँ	वहां	वहाँ
हां	हाँ		

4. अनुस्वार

अँक	अंक (अङ्क)	पँक	पंक (पङ्क)
रँक	रंक (रङ्क)	शँकर	शंकर (शङ्कर)
पँख	पंख (पङ्ख)	अँग	अंग (अङ्ग)
कँगन	कंगन (कङ्गन)	जँग	जंग (जङ्ग)
रँग	रंग (रङ्ग)	कँचन	कंचन (कण्चन)
मँज	मंजुल (मण्जुल)	घँटी	घंटी (घण्टी)
पँडा	पंडा (पण्डा)	पँत	पंत (पन्त)
पँथ	पंथ (पन्थ)	चँदन	चंदन (चन्दन)
पँप	पंप (पम्प)	गँभीर	गंभीर (गम्भीर)
सँसार	संसार	हिन्सा	हिंसा

यदि नासिक्य व्यंजन के पूर्व समान अर्थात् वही नासिक व्यंजन अर्ध रूप में प्रयुक्त हो, तो उसके मूल रूप में ही लिखना होगा, उसका अनुस्वार रूप नहीं होता है, यथा—

भिंन	भिन्न	अंन	अन्न
संमान	सम्मान	समिलित	सम्मिलित

5. 'ण' नासिक्य व्यंजन

ङँ >ण	गँङेश	गणेश	रँङँभूमि	रणभूमि
	रँङ	रण	गँङँना	गणना
	रामायँङँ	रामायण	आचरन	आचरण
	शरँङँ	शरण	नारायन	नारायण
न>ण	आक्रमन	आक्रमण	आचरण	आचरण
	किरन	किरण	गनित	गणित
	गुन	गुण	तृन	तृण
	निरीक्षन	निरीक्षण	प्रान	प्राण
	शरन	शरण	स्मरन	स्मरण

6. 'र' प्रयोग

अरथ	अर्थ	आर्शीवाद	आशीर्वाद
आर्दश	आदर्श	करम	कर्म
धरम	धर्म	मरयादा	मर्यादा
वर्क्स	वर्क्स	वर्त्स्य	वर्त्स्य
कार्यकर्म	कार्यक्रम	चन्दर	चन्द्र
तीवर	तीव्र	परसन्न	प्रसन्न
परसाद	प्रसाद	परतिज्ञा	प्रतिज्ञा
समुन्दर	समुद्र	सहसत्र	सहस्त्र
सत्रोत	स्त्रोत	टरक	ट्रक
टराम	ट्राम	डरम	ड्रम

7. 'ब > व'

पूर्ब	पूर्व	बन	वन
बनस्पति	वनस्पति	बर्षा	वर्षा
बाणी	वाणी	बिशधर	विषधर
बिलास	विलास	बैदेही	वैदेही

8. श, ष, स प्रयोग

स > श

असोक	अशोक	आदर्स	आदर्श
आसा	आशा	देसी	देशी
प्रसंसा	प्रशंसा	विस्वास	विश्वास
संकर	शंकर	पस्चात	पश्चात्

'ष, स > ष'

कस्ट	कष्ट	अभीस्ट	अभीष्ट
घनिस्ट	घनिष्ट	रास्ट्र	राष्ट्र
भविस्य	भविष्य	संतुश्ट	संतुष्ट

'ष > स'

नमश्कार	नमस्कार	प्रशाद	प्रसाद
शंकट	संकट	शाशन	शासन
शुशोभित	सुशोभित	हंश	हंस

9. 'ऋ > र' प्रयोग

उपगृह	उपग्रह	भृश्ट	भ्रष्ट
गृहण	ग्रहण	रिशि	ऋषि
रित	ऋतु	रिण	ऋण
श्रंगार	शृंगार	ह्रदय	हृदय

10. 'ज्ञ – ग्य' प्रयोग

ग्यान	ज्ञान	आग्या	आज्ञा
ग्यापन	ज्ञापन	प्रतिग्या	प्रतिज्ञा
विग्यान	विज्ञान		
भाज्ञ	भाग्य		

11. 'छ – क्ष' प्रयोग

कछा	कक्षा	छमा	क्षमा
छुद्र	क्षुद्र	छेत्र	क्षेत्र
नछत्र	नक्षत्र	लछण	लक्षण
वपछ	विपक्ष		

12. अल्प्राण–महाप्राण प्रयोग

गढ्ढा	गड्ढा	पथ्थर	पत्थर
बध्धी	बग्घी	मख्खन	मक्खन

13. श्रुतिमूलक प्रयोग (जहाँ पर 'स्वर' सुनाई दे वहाँ स्वर का ही प्रयोग करें)

अपनायी	अपनाई	आये	आए
खाईये	खाइए	गये	गए
जाइये	जाइए	नयी	नई
पुरवायी	पुरवाई	बाधायें	बाधाएँ
बलिकायें	बालिकाएँ	बुलाये	बुलाएँ
लिये	लिए	समस्याये	समस्याएँ
सहनायी	शहनाई		

शुद्ध	अशुद्ध
अनधिकार	अनाधिकार
रुपया	रूपया
शुरू	शुरु
स्वरूप	स्वरुप
आचरण	आचरन
श्रृंगार	श्रृंगार
घनिष्ठ	घनिष्ट
खाइए	खाइये
अनुशंसा	अनुसंसा
प्रशंसा	प्रसंसा
अभिशासी	अभिसासी
कैलास	कैलाश
ज्योत्स्ना	ज्योत्सना
अन्तःसाक्ष्य / अन्तस्साक्ष्य	अन्त साक्ष्य
अनुगृहीत	अनुग्रहित
अनुग्रह	अनुगृह
जाग्रत	जागृत
जागृति	जाग्रति
महीना	महिना
इकाइयाँ	ईकाइयाँ
दवाई	दवाइ
दीवार	दिवार
इलाज	ईलाज
इमारत	ईमारत
ऊष्मा	उष्मा
उषा	ऊषा
वापस	वापिस
उपलक्ष्य	उपलक्ष
अन्तर्धान	अन्तर्ध्यान
प्रियदर्शिनी	प्रियदर्शनी
प्रदर्शनी	प्रदर्शिनी
दुरवस्था	दुरावस्था
गत्यवरोध	गत्यावरोध
अन्त्याक्षरी	अन्ताक्षरी
उंगली	अंगुली
कुआँ	कुआ
करेंगे	करेगें
उद्गार	उदगार
श्रृंखला	श्रृंखला
निरपराध	निरापराध
कवयित्री	कवियत्री
रचयिता	रचियता
पूजनीय	पूजनिय
सुंदरता	शुंदरता
धनाढ्य	धनाड्य
तैंतालिस	तेंतालिस
उज्ज्वल	उज्जवल
अकस्मात्	अक्समात
अगम्य	अगमय
अतिथि	अतिथी
अद्वितीय	अद्वितय
अधोगति	अधोगती
अधीक्षक	अधिक्षक
आनुषंगिक	आनुसंगिक
निरवलंब	निरावलंब
परिशिष्ठ	परिशिष्ट
पश्चात्ताप	पश्चाताप
प्रतिनिधि	प्रतीनिधि
माहात्म्य	महात्म्य
याज्ञवल्क्य	याज्ञवलक्य
लब्धप्रतिष्ठ	लब्धप्रतिष्ट
शूर्पणखा	शूपर्णखा
सहस्त्र	शहास्त्र
सरोजिनी	सरोजनी
ईर्ष्या	इर्ष्या
गृहिणी	गृहणी
ऊर्ध्व	उर्ध्व
मुहूर्त	मुहुर्त
नूपुर	नुपूर
प्राणिशास्त्र	प्राणीशास्त्र
मंत्रिपरिषद्	मंत्रीपरिषद्
सन्न्यासी	सन्यासी
प्रस्तुति	प्रस्तुती
प्रस्तुतीकरण	प्रस्तुतिकरण
शुद्धि	शुद्धी
शुद्धीकरण	शुद्धिकरण
कर्ता	कर्त्ता
प्रज्वलित	प्रजवलित
कर्तव्य	कर्त्तव्य
वरिष्ठ	वरिष्ट
स्वादिष्ठ	स्वादिष्ट
मिष्टान्न	मिष्ठान्न
उच्छिष्ट	उच्छिष्ठ
निकृष्ट	निकृष्ठ
वाल्मीकि	वाल्मीकी
कैकेयी	केकैयी
न्योछावर	न्यौछावर
मध्याह्न	मध्याहन
पूर्वाह्न	पूर्वाहन

आह्वान	आहवान
उपर्युक्त	उपरोक्त
अधःपतन	अधपतन
अभयारण्य	अभ्यारण्य
अमावस्या	अमावस
अहल्या	अहिल्या
आशीर्वाद	आर्शीवाद
आह्लाद	आहलाद
उच्छृंखल	उच्छखल
उज्जयिनी	उज्जयिनी
उल्लिखित	उल्लेखित
ओखली	औखली
ऐच्छिक	एच्छिक
कार्यवाही	कारवाई
कौतुहल	कोतुहल
कृतकृत्य	कृत्कृत्य
कृपया	कृप्या
केन्द्रीय	केन्द्रिय
कौशल्या	कोशिल्या
गण्यमान्य	गणमान्य
गीतांजलि	गितांजली
घनिठ	घनिष्ट
चिह्न	चिहन
तंदुरूस्त	तदुरस्त
तात्कालिक	तत्कालिक
तत्त्वावधान	तत्वाधान
तदुपरांत	तदोपरांत
त्योहार	त्योंहार
निजी	नीजि
निधि	निधी
पडोसी	पडौसी
परिस्थिति	परिस्थिती
पुनरवलोकन	पुनरावलोकन
मल्लयुद्ध	मलयुद्ध
मातृभूमि	मातृभूमी
राजनीतिक	राजनैतिक
व्यावहारिक	व्यवहारिक
शुश्रूषा	शुश्रुषा
स्थायित्व	स्थायीत्व
प्रतीक्षा	प्रतिक्षा
दंपती	दंपति

शुद्ध—वर्तनी

भाषा में शुद्ध उच्चारण के साथ शुद्ध वर्तनी का भी महत्त्व होता है। अशुद्ध वर्तनी से भाषा का सौन्दर्य को नष्ट होता ही है, कहीं कहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। वर्तनी अशुद्धि के कई कारण हो सकते हैं यथा

1. **स्वरागम के कारण** – निम्न शब्दों में किसी वर्ण के साथ अनावश्यक स्वर प्रयुक्त हो जाने से वर्तनी अशुद्ध हो जाती है अतः उसे हटा कर वर्तनी शुद्ध की जा सकती है।

अशुद्ध वर्तनी	**=**	**शुद्ध वर्तनी**
अत्याधिक	=	अत्यधिक
अनाधिकार	=	अनधिकार
आधीन	=	अधीन
दुरावस्था	=	दुरवस्था
गत्यावरोध	=	गत्यवरोध
द्वारिका	=	द्वारका
घुटुना	=	घुटना
अभ्यार्थी	=	अभ्यर्थी
अहिल्या	=	अहल्या
शमशान	=	श्मशान
प्रदर्शिनी	=	प्रदर्शनी
वापिस	=	वापस
व्यौपारी	=	व्यापारी

2. **स्वरलोप के कारण** – उचित स्थर के अभाव के कारण

आखरी	=	आखिरी
कुटम्ब	=	कुटुम्ब
मैथली	=	मैथिली
अगामी	=	आगामी
गौरव	=	गोरव
महात्म्य	=	माहात्म्य
आजीवका	=	आजीविका
कुमुदनी	=	कुमुदिनी
स्वस्थ्य	=	स्वास्थ्य
वयवृद्ध	=	वयोवृद्ध
मुकट	=	मुकुट
अजानु	=	आजानु
उन्नतशील	=	उन्नतिशील
अतिश्योक्ति	=	अतिशयोक्ति
मुकन्द	=	मुकुन्द
आप्लवित	=	आप्लावित
दुगनी	=	दुगुनी
बदाम	=	बादाम
विपन्नवस्था	=	विपन्नावस्था
सतरंगनी	=	सतरंगिनी
युधिष्ठर	=	युधिष्ठिर
फिटकरी	=	फिटकिरी
विरहणी	=	विरहिणी
वाहनी	=	वाहिनी
पारितोषक	=	पारितोषिक
भगीरथी	=	भागीरथी
अष्टवक्र	=	अष्टावक्र
जमाता	=	जामाता
नृत्यंगना	=	नृत्यांगना
लोकिक	=	लौकिक

3. **व्यंजनागम के कारण** – शब्द में अनावश्यक व्यंजन के प्रयुक्त हो जाने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

अवन्नति	=	अवनति
बुद्धवार	=	बुधवार
सदृश्य	=	सदृश

Unleash the topper in you

निश्च्छल	=	निश्छल
समुन्द्र	=	समुद्र
केन्द्रीयकरण	=	केन्द्रीकरण
शुभेच्छुक	=	शुभेच्छु
कृत्य–कृत्य	=	कृत–कृत्य
प्रज्ज्वलित	=	प्रज्वलित
अन्तर्ध्यान	=	अन्तर्धान
पूज्यनीय	=	पूजनीय
श्राप	=	शाप
निन्द्रित	=	निद्रित
कुत्तिया	=	कुतिया
गोवर्द्धन	=	गोवर्धन
षष्ठम्	=	षष्ठ

4. **व्यंजन लोप के कारण** – किसी वर्तनी में व्यंजन के न लिखने पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

अध्यन	=	अध्ययन
उमीदवार	=	उम्मीदवार
व्यंग	=	व्यंग्य
उछृंखल	=	उच्छृंखल
उद्देश	=	उद्देश्य
महत्व	=	महत्त्व
समुचय	=	समुच्चय
इन्द्रा	=	इन्दिरा
उपलक्ष	=	उपलक्ष्य
तरुछाया	=	तरुच्छाया
आर्द	=	आर्द्र
निरलम्ब	=	निरवलम्ब
राजाभिषेक	=	राज्याभिषेक
स्वातन्त्र	=	स्वातंत्र्य
द्विधा	=	द्विविधा
ईषा	=	ईर्ष्या
तदन्तर	=	तदनन्तर
सामर्थ	=	सामर्थ्य
द्वन्द्व	=	द्वन्द
उत्पन	=	उत्पन्न
समुनयन	=	समुन्नयन
मिष्टान	=	मिष्टान्न
उलंघन	=	उल्लंघन
चार दीवारी	=	चहार दीवारी
स्तनपान	=	स्तन्य पान
तत्वाधान	=	तत्त्वावधान
श्रेयकर	=	श्रेयस्कर
स्वालम्बन	=	स्वावलम्बन
योधा	=	योद्धा

5. **वर्णक्रम भंग के कारण** – वर्तनी में किसी वर्ण का क्रम बदलने पर अर्थात् वर्ण का क्रम आगे पीछे होने पर वर्तनी अशुद्ध हो जायेगी। यथा–

अथिति	=	अतिथि
मध्यान्ह	=	मध्याह्न
आव्हान	=	आह्वान
गव्हर	=	गह्वर
आल्हाद	=	आह्लाद
अलम	=	अमल
चिन्ह	=	चिह्न
ब्रम्हा	=	ब्रह्मा
जिव्हा	=	जिह्वा
आन्नद	=	आनन्द
प्रसंशा	=	प्रशंसा

6. **वर्णपरिवर्तन के कारण** – किसी वर्तनी में किसी वर्ण के स्थान पर दूसरा वर्ण लिख देने पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

बतक	=	बतख
दस्तकत	=	दस्तखत
जुखाम	=	जुकाम
संगटन	=	संघटन
संघठन	=	संगठन
यथेष्ठ	=	यथेष्ट
मिष्ठान्न	=	मिष्टान्न
संश्लिष्ठ	=	संश्लिष्ट
कनिष्ट	=	कनिष्ठ
बसिष्ट	=	वसिष्ठ
कुष्ट	=	कुष्ठ
धनाड्य	=	धनाढ्य
ऋन	=	ऋण
सुश्रूषा	=	शुश्रूषा
आशीश	=	आशीष
आमिश	=	आमिष
विध्वंश	=	विध्वंस
निसिद्ध	=	निषिद्ध
ऊँगना	=	ऊँघना
मेगनाद	=	मेघनाद
रिमजिम	=	रिमझिम
सन्तुष्ठ	=	सन्तुष्ट
परिशिष्ठ	=	परिशिष्ट
बलिष्ठ	=	बलिष्ट
कटहरा	=	कठहरा
युधिष्टिर	=	युधिष्ठिर
सीडी	=	सीढ़ी
रामायन	=	रामायण
पुन्य	=	पुण्य
अवकास	=	अवकाश
शोडशी	=	षोडशी
कैलाश	=	कैलास
पुरष्कार	=	पुरस्कार
विध्यालय	=	विद्यालय

7. **पंचम् वर्ण, अनुस्वार एवं चन्द्रबिन्दु के कारण** किसी वर्ग के अन्तिम नासिक्य वर्ण के स्थान पर अन्य नासिक्य वर्ण लगाने या सही स्थान पर अनुस्वार नहीं लगाने तथा उचित स्थान पर चन्द्रबिन्दु का उपयोग न करने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

वांगमय	=	वाङ्मय
मन्डल	=	मण्डल
सन्यासी	=	सन्न्यासी

Toppersnotes Unleash the topper in you

इन्होनें	=	इन्होंने
करेगें	=	करेंगे
सम्वर्धन	=	संवर्धन
आंख	=	आँख
ऊंट	=	ऊँट
पहुंच	=	पहुँच
ऊंचाई	=	ऊँचाई
ढूंढना	=	ढूँढना
कुंआ	=	कुआँ
दुनियाँ	=	दुनिया
चन्चल	=	चंचल
षन्मुख	=	षण्मुख
एंकाकी	=	एकांकी
उन्नीसवी	=	उन्नीसवीं
स्वयम्वर	=	स्वयंवर
क्रांन्ति	=	क्रान्ति
हंसी	=	हँसी
आंधी	=	आँधी
सांझ	=	साँझ
जाऊंगा	=	जाऊँगा
दांत	=	दाँत
दिनाँक	=	दिनांक
पांच	=	पाँच

8. **रेफ सम्बन्धी** – र् रेफ के रूप में उचित वर्ण पर न लगाने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है। र् रेफ के रूप में उस वर्ण पर लगाना चाहिए, जिस वर्ण से पूर्व का उच्चारण होता है।

आर्शीवाद	=	आशीर्वाद
आकषर्ण	=	आकर्षण
उर्त्तीण	=	उत्तीर्ण
प्रार्दुभाव	=	प्रादुर्भाव
दशर्नीय	=	दर्शनीय
अर्न्तभाव	=	अन्तर्भाव
मुर्हरम	=	मुहर्रम
दुव्यर्सन	=	दुर्व्यसन
पुर्नजन्म	=	पुनर्जन्म
गर्वनर	=	गवर्नर
अर्न्तगत	=	अन्तर्गत
आर्युवेद	=	आयुर्वेद
शार्गीद	=	शागीर्द
प्रर्वतक	=	प्रवर्तक

9. **ऋ के स्थान पर र (्र) के प्रयोग के कारण**

श्रृंगार	=	शृंगार
द्रश्य	=	दृश्य
पैत्रिक	=	पैतृक
ग्रहिणी	=	गृहिणी
भ्रंग	=	भृंग
जाग्रति	=	जागृति
श्रंग	=	शृंग
तिरस्क्रत	=	तिरस्कृत
सम्रद्ध	=	समृद्ध
ह्रदय	=	हृदय
श्रृंखला	=	शृंखला
स्रष्टि	=	सृष्टि
अनुग्रहीत	=	अनुगृहीत
द्रष्टि	=	दृष्टि
प्रक्रति	=	प्रकृति
भ्रगु	=	भृगु
संग्रहीत	=	संगृहीत
ग्रहीत	=	गृहीत
भ्रत्य	=	भृत्य
व्रत्तान्त	=	वृतांत
म्रदंग	=	मृदंग

10. **'र' के स्थान पर 'ऋ'के प्रयोग के कारण।**

बृज	=	ब्रज
दृष्टा	=	द्रष्टा
अनुगृह	=	अनुग्रह
जागृत	=	जाग्रत
बृटिश	=	ब्रिटिश

11. **र (्र) के स्थान पर 'त्र' के प्रयोग के कारण।**

सहस्त्र	=	सहस्र
अजस्त्र	=	अजस्र
स्त्रोत	=	स्रोत
स्त्राव	=	स्राव

12 **संयुक्ताक्षर सम्बन्धी** – सही संयुक्ताक्षर का प्रयोग न करने से वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

कब्बड़ी	=	कबड्डी
प्रसिद्व	=	प्रसिद्ध
विध्यालय	=	विद्यालय
द्वन्द्व	=	द्वन्द्व
लग्‌न	=	लग्न
द्‌वितीय	=	द्वितीय
गद्धा	=	गद्‌दा
महत्व	=	महत्त्व
ज्योत्सना	=	ज्योत्स्ना
पध्य	=	पद्य
दफ्‌तर	=	दफ्तर

13. **सन्धि सम्बन्धी** – सही सन्धि न होने पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

उपरोक्त	=	उपर्युक्त
अत्योक्ति	=	अत्युक्ति
पुनरोक्ति	=	पुनरुक्ति
उज्जवल	=	उज्ज्वल
निरोग	=	नीरोग
तदोपरान्त	=	तदुपरान्त
सदोपदेश	=	सदुपदेश
लघुत्तर	=	लघुत्तर
मनहर	=	मनोहर
मरुद्यान	=	मरूद्यान
यावतजीयन	=	यावज्जीवन
उत्शिष्ट	=	उच्छिष्ट
विसाद	=	विषाद

Toppersnotes
Unleash the topper in you

रविन्द्र	=	रवीन्द्र
निरावलम्ब	=	निरवलम्ब
शरदोत्सव	=	शरदुत्सव
महेश्वर्य	=	महैश्वर्य
अनुसंग	=	अनुषंग
अन्तर्चेतना	=	अन्तश्चेतना
पयोपान	=	पयःपान
षट्मुख	=	षण्मुख
षडयंत्र	=	षड्यन्त्र
अन्तसाक्ष्य	=	अन्तः साक्ष्य

14. समास सम्बन्धी – सामासिक प्रक्रिया में पदों के मेल पर उनके रूप में परिवर्तन भी होता है अतः सही समास न होने से वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

मन्त्री परिषद्	=	मन्त्रि–परिषद
योगीराज	=	योगिराज
पिता–भक्ति	=	पितृ–भक्ति
माताहीन	=	मातृहीन
पक्षीराज	=	पक्षिराज
दुरात्मागण	=	दुरात्मगण
मुनीजन	=	मुनिजन
नवरात्रि	=	नवरात्र
दुपहर	=	दोपहर
अहो–रात्रि	=	अहोरात्र
निशिशेष	=	निशाशेष
प्राणी–विज्ञान	=	प्राणि–विज्ञान
चक्रपाणी	=	चक्रपाणि
राजागण	=	राजगण

15. प्रत्यय सम्बन्धी – प्रत्यय का सही प्रयोग न होने पर।

व्यवहारिक	=	व्यावहारिक
प्रमाणिक	=	प्रामाणिक
सेनिक	=	सैनिक
पुराणिक	=	पौराणिक
योगिक	=	यौगिक
माधुर्यता	=	माधुर्य
कौशलता	=	कौशल
बाहुल्यता	=	बाहुल्य
निरपराधी	=	निरपराध
निर्दयी	=	निर्दय
निर्दोषी	=	निर्दोष
यौवनावस्था	=	यौवन
आवश्यकीय	=	आवश्यक
कृतघ्नी	=	कृतघ्न
क्रोधित	=	क्रुद्ध
लब्ध प्रतिष्ठित	=	लब्ध–प्रतिष्ठ
अनुपातिक	=	आनुपातिक
इतिहासिक	=	ऐतिहासिक
वेदिक	=	वैदिक
भूगोलिक	=	भौगोलिक
सौन्दर्यता	=	सौन्दर्य
औदार्यता	=	औदार्य
प्रधान्यता	=	प्राधान्य

लावण्यता	=	लावण्य
नीरोगी	=	नीरोग
दरिद्री	=	दरिद्र
निर्धनी	=	निर्धन
मान्यनीय	=	माननीय
एकत्रित	=	एकत्र
अभिशापित	=	अभिशाप्त
अनुवादित	=	अनूदित

16. लिंग सम्बन्धी – अशुद्ध लिंग रूप भी वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धि बन जाता है।

कवियित्री	=	कवयित्री
हथनी	=	हथिनी
सुलोचनी	=	सुलोचना
विदुषि	=	विदुषी
हंसनी	=	हंसिनी
ठाकुराइन	=	ठकुराइन
गृहणी	=	गृहिणी
सरोजनी	=	सरोजिनी
कामनी	=	कामिनी
श्रीमति	=	श्रीमती
साम्राज्ञी	=	सम्राज्ञी
चम्पारन	=	चमारिन
प्रियदर्शनी	=	प्रियदर्शिनी
कमलनी	=	कमलिनी
बुद्धिमति	=	बुद्धिमती
कर्ती	=	कर्त्री
तपस्वनी	=	तपस्विनी

17. वचन सम्बन्धी – बहुवचन बनाने के नियमों की उपेक्षा करने पर भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

दवाईयाँ	=	दवाइयाँ
परीक्षार्थीयों	=	परीक्षार्थियों
सन्यासी वग	=	सन्यासिवर्ग
प्राणीवृन्द	=	प्राणिवृन्द
इकाईयाँ	=	इकाइयाँ
हिन्दूओं	=	हिन्दुओं
खेतीहर	=	खेतिहर
विद्यार्थीगण	=	विद्यार्थिगण

18. विसर्ग सम्बन्धी – वर्तनी में सही विसर्ग का प्रयोग न करने या विसर्ग सन्धि की अशुद्धि पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

प्रातकाल	=	प्रातःकाल
दुख	=	दुःख
प्राय	=	प्रायः
अन्तकरण	=	अन्तः करण
अतः एव	=	अतएव
अधोपतन	=	अधःपतन
निकंटक	=	निष्कंटक / निःकंटक
निश्वास	=	निःश्वास
निसंदेह	=	निःसंदेह / निस्सन्देह

Toppersnotes Unleash the topper in you

19. हलन्त का प्रयोग न करने पर।

परिषद	=	परिषद्
षडयन्त्र	=	षड्यन्त्र
षटरस	=	षट् रस
गदगद	=	गद्गद्
तड़ित	=	तड़ित्
भाषाविद	=	भाषाविद्
उच्छवास	=	उच्छ्वास
उदघाटन	=	उद्घाटन
उदगार	=	उद्गार
विद्युत	=	विद्युत्
पृथक	=	पृथक्

20. उपसर्ग सम्बन्धी – सही उपसर्ग का प्रयोग न होने या अनावश्यक उपसर्ग लगा देने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

उदण्ड	=	उद्दण्ड
दरअसल में	=	दरअसल
बेफजूल	=	फजूल
सविनयपूर्व	=	सविनय

21. मात्रा सम्बन्धी – स्वर की उचित मात्रा के प्रयोग न करने से सर्वाधिक वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ होती हैं।

रात्री	=	रात्रि
हानी	=	हानि
वाल्मीकी	=	वाल्मीकि
मूर्ती	=	मूर्ति
तिलांजली	=	तिलांजलि
ईकाई	=	इकाई
बिमार	=	बीमार
पत्नि	=	पत्नी
निरोग	=	नीरोग
रचियता	=	रचयिता
दिवार	=	दीवार
इप्सित	=	ईप्सित
शत्रू	=	शत्रु
मूमूर्ष	=	मुमूर्ष
सुक्ष्म	=	सूक्ष्म
मुहुर्त	=	मुहूर्त
एरावत	=	ऐरावत
वित्तेषणा	=	वित्तैषणा
न्यौछावर	=	न्योछावर
ओजार	=	औजार
कालीदास	=	कालिदास
अमुल्य	=	अमूल्य
प्रतिनिधी	=	प्रतिनिधि
परिक्षा	=	परीक्षा
पती	=	पति
निरिक्षण	=	निरीक्षण
महिना	=	महीना
पिपिलिका	=	पिपीलिका
गुरू	=	गुरु
अश्रू	=	अश्रु
सामुहिक	=	सामूहिक
जाउँगा	=	जाऊँगा
कुतुहल	=	कौतूहल
एच्छिक	=	ऐच्छिक
त्यौहार	=	त्योहार
भोतिक	=	भौतिक
दधीची	=	दधीचि
रूपया	=	रुपया
नुपुर	=	नूपुर
वधु	=	वधू

अन्य कारण – उपर्युक्त कारणों के अतिरिक्त वर्तनी अशुद्धि के और भी कई कारण हो सकते हैं।

इस्कूल	=	स्कूल
कृष्णा	=	कृष्ण
कालेज	=	कॉलेज
बारहवी	=	बारहवीं
सहाब	=	साहब
इस्नान	=	स्नान
गुप्ता	=	गुप्त
वालीबाल	=	वॉलीबॉल
तियालीस	=	तैंतालीस

Toppernotes Unleash the topper in you

वाक्य–शुद्धि

शब्द शुद्धि के साथ वाक्य शुद्धि का भी भाषा में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वाक्य में अनावश्यक शब्द प्रयोग से, अनुपयुक्त शब्द के प्रयुक्त होने से, सही क्रम या अन्विति न होने से, लिंग, वचन, कारक का सही प्रयोग नहीं होने से, सही सर्वनाम एवं क्रिया का प्रयोग न होने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है, जो अर्थ के साथ भाषा सौन्दर्य को हानि पहुँचाता है।

1. अनावश्यक शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि

समान अर्थ वाले दो शब्दों या विपरीत अर्थ वाले शब्दों के एक साथ प्रयोग होने तथा एक ही शब्द की पुनरावृत्ति पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है। अतः किसी एक अनावश्यक शब्द को हटाकर वाक्य शुद्ध बनाया जा सकता है। इनमें दोनों शब्दों में से किसी एक को हटाना होता है। अतः दोनों रूपों में वाक्य सही हो सकता है। यहाँ एक रूप ही देंगे।

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
1. मैं प्रातः काल के समय पढ़ता हूँ।	1. मैं प्रातः काल पढ़ता हूँ।
2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड की सजा दी।	2. जज ने उसे मृत्यु दण्ड दिया।
3. इसके बाद फिर क्या हुआ?	3. इसके बाद क्या हुआ ?
4. यह कैसे सम्भव हो सकता है ?	4. यह कैसे संभव है ?
5. मेरे पास केवल मात्र एक घड़ी है।	5. मेरे पास केवल एक घड़ी है।
6. तुम वापस लौट जाओ।	6. तुम वापस जाओ।
7. सारे देश भर में यह बात फैल गई।	7. सारे देश में यह बात फैल गई।
8. वह सचिवालय कार्यालय में लिपिक है।	8. वह सचिवालय में लिपिक है।
9. विन्ध्याचल पर्वत हिमालय से प्राचीन है।	9. विन्ध्याचल हिमालय से प्राचीन है।
10. नौजवान युवक युवतियों को आगे आना चाहिए।	10. नौजवानों को आगे आना आना चाहिए।
11. किसी और दूसरे से परामर्श लीजिए।	11. किसी और से परामर्श लीजिए।
12. सप्रमाण सहित उत्तर दीजिए।	12. सप्रमाण उत्तर दीजिए।
13. गुलामी की दासता बुरी है।	13. गुलामी बुरी है।
14. प्रशान्त बहुत सज्जन पुरुष है।	14. प्रशान्त बहुत सज्जन है।
15. शायद आज वर्षा अवश्य आयेगी।	15. शायद आज वर्षा आयेगी।
16. शायद यह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।	16. वह जरूर उत्तीर्ण हो जायेगा।
17. कृपया शीघ्र उत्तर देने की कृपा करें।	17. कृपया शीघ्र उत्तर दें।
18. वह गुनगुने गरम पानी से नहाता है।	18. यह गुनगुने पानी से नहाता है।
19. गरम आग लाओ।	19. आग लाओ।
20. तुम सबसे सुन्दरतम हो।	20. तुम सबसे सुन्दर हो।

2. अनुपयुक्त शब्द के कारण

वाक्य में अनुपयुक्त शब्द प्रयुक्त हो जाने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है अतः अनुपयुक्त शब्द हटाकर उस स्थान पर उपयुक्त शब्द का प्रयोग करना चाहिए।

1. सीता राम की स्त्री थी।	1. सीता राम की पत्नी थी।
2. रातभर गधे भौंकते रहे।	2. रातभर कुत्ते भौंकते रहे।
3. कोहिनूर एक अमूल्य हीरा है।	3. कोहिनूर एक बहुमूल्य हीरा है।
4. बन्दूक एक शस्त्र है।	4. बन्दूक एक अस्त्र है।
5. आकाश में तारे चमक रहे हैं।	5. आकाश में तारे टिमटिमा रहे हैं।
6. आकाश में झण्डा लहरा रहा है।	6. आकाश में झण्डा फहरा रहा हैं।
7. उसकी भाषा देवनागरी है।	7. उसकी लिपि देवनागरी है।
8. वह दही जमा रही है।	8. वह दूध जमा रही है।
9. साहित्य व समाज का घोर संबंध है।	9. साहित्य व समाज का घनिष्ठ संबंध है।
10. उसके गले में बेड़ियाँ पड़ गई।	10. उसके पैरों में बेड़ियाँ पड़ गई।
11. हाथी पर काठी बाँध दो।	11. हाथी पर हौदा रख दो।
12. चिन्ता एक भयंकर व्याधि है।	12. चिन्ता एक भयंकर आधि है।
13. गगन बहुत ऊँचा है।	13. गगन बहुत विशाल है।
14. वह पाँव से जूता निकाल रहा है।	14. वह पाँव से जूता उतार रहा है।
15. कृपया मेरी सौभाग्यवती कन्या के विवाह में में पधारें।	15. कृपया मेरी सौभाग्याकांक्षिणी कन्या के विवाह में पधारें।
16. उसे अपनी योग्यता पर अहंकार है।	16. उसे अपनी योग्यता पर गर्व है।
17. राष्ट्रपति ने पुरस्कार भेंट किए।	17. राष्ट्रपति ने पुरस्कार प्रदान किए।
18. कृष्ण ने कंस की हत्या की।	18. कृष्ण ने कंस का वध किया।
19. विख्यात आतंकवादी मारा गया।	19. कुख्यात आतंकवादी मारा गया।

3. लिंग सम्बन्धी

वाक्य में प्रयुक्त शब्द के अनुसार उचित लिंग का प्रयोग न होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

1. यह एकांकी बहुत अच्छी है।	1. यह एकांकी बहुत अच्छा है।
2. मेरे मित्र की पत्नी विद्वान है।	2. मेरे मित्र की पत्नी विदुषी है।
3. मीरा एक प्रसिद्ध कवि थी।	3. मीरा एक प्रसिद्ध कवयित्री है।
4. बेटी पराये घर का धन होता हैं।	4. बेटी पराये घर का धन होती है।
5. सत्य बोलना उसकी आदत था।	5. सत्य बोलना उसकी आदत थी।

6. बुआजी आप क्या कर रहे हैं?	6. बुआजी आप क्या कर रही हैं?
7. आत्मा अमर होता है।	7. आत्मा अमर होती है।
8. सेनापति को प्रणाम करनी पड़ती है।	8. सेनापति को प्रणाम करना पड़ता है।
9. ब्रह्मपुत्र असम में बहता है।	9. ब्रह्मपुत्र असम में बहती है।
10. वह स्त्री नहीं मूर्तिमन्त करुणा हैं।	10. वह स्त्री नहीं मूर्तिमयी करुणा हैं।
11. जया एक बुद्धिमान बालिका है।	11. जया एक बुद्धिमती बालिका हैं।
12. उसका ससुराल जयपुर में है।	12. उसकी ससुराल जयपुर में है।
13. तूफान मेल तेजी से आ रही है।	13. तूफानमेल तेजी से आ रहा है।
14. गंगा पतितपावन नदी है।	14. गंगा पतित पावनी नदी है।
15. रामायण हमारी भक्ति ग्रंथ है।	15. रामायण हमारा भक्ति ग्रंथ है।
16. उसके हाथ की वस्तु आम थी।	16. उसके हाथ की वस्तु आम था।
17. वह अपने धुन में जा रहा है।	17. वह अपी धुन में जा रहा है।

4. वचन सम्बन्धी

हिन्दी में कुछ शब्द सदैव बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं अतः उनका उचित बोध न होने पर तथा कर्ता एवं कर्म के वचन के अनुसार क्रिया प्रयुक्त न होने पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

1. वह दृश्य देख मेरी आँख आँसू में आ गये।	1. वह दृश्य देख मेरी आँखों में आँसू आ गये।
2. वृक्षों पर काया बोल रहा है।	2. वृक्ष पर कौवा बोल रहा है।
3. यह मेरा ही हस्ताक्षर है।	3. ये मेरे ही हस्ताक्षर हैं।
4. आज आपका दर्शन हो गया।	4. आज आपके दर्शन हो गये।
5. अभी तीन बजा है।	5. अभी तीन बजे हैं।
6. यह दस रुपया का मोट है।	6. यह दस रुपये का नोट है।
7. प्रत्येक घोड़े तेज गति वाले नहीं होते।	7. प्रत्येक घोड़ा तेज गति वाला नहीं होता।
8. हिन्दी और अंग्रेजी मेरी भाषा है।	8. हिन्दी और अंग्रेजी मेरी भाषाएँ है।
9. प्यास के मारे उसका प्राण निकल गया।	9. प्यास के मारे उसके प्राण निकल गया।
10. माँ मेरे मामे के घर गयी है।	10. माँ मेरे मामा के घर गयी हैं।
11. दिल्ली में चार गिरफ्तारी हुईं।	11. दिल्ली में चार गिरफ्तारियाँ हुई।
12. विधि का नियम बड़ा कठोर होता है।	12. विधि के नियम बड़े कठोर होते हैं।
13. नवरस में शृंगार का प्रधान स्थान है।	13. नवरसों में श्रृंगार का प्रधान स्थान है।
14. उसकी भुजाएँ घुटने तक लम्बी हैं।	14. उसकी भुजाएँ घुटनों तक लम्बी हैं।
15. अब आप पढ़ों।	15. अब आप पढ़िये।
16. आम और कलम शब्द संज्ञा है।	16. आम और कलम शब्द संज्ञाएँ हैं।
17. शहर प्रायः गन्दा होता है।	17. शहर प्रायः गन्दे होते हैं।
18. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखों।	18. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखो।
19. हिमालय पर्वत का राजा है।	19. हिमालय पर्वतों का राजा है।
20. मैंने अनेकों कहानियाँ पढ़ीं।	20. मैंने अनेक कहानियाँ पढ़ीं।

5. क्रमभंग सम्बन्धी

वाक्य रचना के आधार पर शब्द के उचित स्थान पर प्रयुक्त न होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

1. अधिकतर हिन्दी के लेखक निर्धन हैं।	1. हिन्दी के अधिकतर लेखक निर्धन हैं।
2. यहाँ पर शुद्ध गाय का घी मिलता है।	2. यहाँ पर गाय का शुद्ध घी मिलता है।
3. शीतल गन्ने का रस पीजिए।	3. गन्ने का शीतल रस पीजिए।
4. हनुमान पक्के राम के भक्त थे।	4. हनुमान राम के पक्के भक्त थे
5. एक खाने की थाली लगाओ।	5. खाने की एक थाली लगाओ।
6. स्वामी दयानन्द का देश आभारी रहेगा।	6. देश स्वामी दयानन्द का आभारी रहेगा।
7. उपयोजना मंत्री आज आयेंगे।	7. योजना उपमंत्री आज आयेंगे।
8. कुत्ते को राम डण्डे से मारता है।	8. राम डण्डे से कुत्ते को मारता है।
9. आपको मैं कुछ नहीं कह सकता।	9. मैं आपको कुछ नहीं कह सकता।
10. हवा ठण्डी चल रही है।	10. ठण्डी हवा चल रही है।
11. सीता के गले में एक मोतियों का हार है।	11. सीता के गले में मोतियों का हार है।
12. अध्यापक जी भूगोल छात्रों को पढ़ा रहे हैं।	12. अध्यापक जी छात्रों को भूगोल पढ़ा रहे हैं।

toppersnotes Unleash the topper in you

13. वे पुराने कपड़े के व्यापारी हैं।	13. वे कपड़े के पुराने व्यापारी हैं।
14. कई रेलवे के कर्मचारियों की गिरफ्तारी हुई।	14. रेलवे के कई कर्मचारियों की गिरफ्तारी हुई।
15. मैंने बहते हुए पत्ते को देखा।	15. मैंने पत्ते को बहते हुए देखा।
16. वास्तव में तुम चतुर हो।	16. तुम वास्तव में चतुर हो।
17. बच्चे को धोकर फल खिलाओ।	17. फल धोकर बच्चे को खिलाओ।
18. वहाँ मुफ्त आँखों का ऑपरेशन होगा।	18. वहाँ आँखों का मुफ्त ऑपरेशन होगा।
19. बैर अपनों से अच्छा नहीं।	19. अपनों से बैर अच्छा नहीं।

6. कारक सम्बन्धी

वाक्य में प्रयुक्त कारक के अनुसार उचित विभक्ति न लगने से, अनावश्यक विभक्ति लगने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

1. पाँच बजने को दस मिनट है।	1. पाँच बजने में दस मिनट हैं।
2. उसके सिर में घने बाल है।	2. उसके सिर पर घने बाल हैं।
3. देशभक्त बड़ी बड़ी यातनाओं को सहते हैं।	3. देशभक्त बड़ी–बड़ी यातनाएँ सहते हैं।
4. अपने बच्चे चरित्रवान बनाओ।	4. अपने बच्चों को चरित्रवान् बनाओ।
5. दवा रोग को समूल से नष्ट करती है।	5. दवा रोग को समूल नष्ट करती है।
6. अपराधी को रस्सी बाँधकर ले गये।	6. अपराधी को रस्सी से बाँधकर ले गये।
7. मेरी राय से आप चले जाइए।	7. मेरी राय में आप चले जाइए।
8. उसने पत्नी का गला घोंट कर मार डाला।	8. उसने पत्नी का गला घोंट डाला।
9 बन्दर पेड़ में बैठे हैं।	9. बन्दर पेड़ पर बैठे हैं।
10. सीता घर नहीं है।	10. सीता घर पर नहीं है।
11. उसकी दृष्टि चित्र में गड़ी थी।	11. उसकी दृष्टि चित्र पर गड़ी थी।
12. उसने न्यायाधीश को निवेदन किया।	12. उसने न्यायाधीश से निवेदन किया।
13. आजकल राजनीति में अपराधी करण हो गया है।	13. आजकल राजनीति का अपराधी करण हो गया है।
14. वह बाजार में सब्जी लाने गया।	14. वह बाजार से सब्जी लाने गया।
15. राम आज स्कूल से अनुपस्थित हैं।	15. राम आज स्कूल में अनुपस्थित है।
16. आज संसद में बजट के ऊपर बहस, होगी।	16. आज संसद में बजट पर बहस होगी।
17. गुरुजी के ऊपर श्रद्धा रखें।	17. गुरुजी के प्रति श्रद्धा रखें।
18. यह ग्रंथ विद्वतापूर्ण लिखा गया है।	18. यह ग्रंथ विद्वता से लिखा गया है।
19. जनता ने सैनिकों को उपहार भेजे।	19. जनता ने सैनिकों के लिए उपहार भेजें।
20. आम को खूब पका होना चाहिए।	20. आम खूब पका होना चाहिए।

7. सर्वनाम सम्बन्धी

सर्वनाम के सही रूप में प्रयोग न होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

1. मैंने आज अजमेर जाना है।	1. मुझे आज अजमेर जाना है।
2. तुम तुम्हारा काम करो।	2. तुम अपना काम करो।
3. मेरे को सौ रुपये की आवश्यकता हैं।	3. मुझे सौ रुपये की आवश्यकता है।
4. राम थककर उसके घर में सो गया।	4. राम थककर अपने घर में सो गया।
5. यह काम तेरे से नहीं होगा।	5. यह काम तुझसे नहीं होगा।
6. मैं उनको मिल कर प्रसन्न हुआ।	6. मैं उनसे मिलकर प्रसन्न हुआ।
7. सबों ने मान लिया कि पृथ्वी घूमती है।	7. सभी ने मान लिया कि पृथ्वी घूमती है।
8. अपने ठीक रास्ते पर हैं।	8. हम ठीक रास्ते पर हैं।
9. तेरे को कहाँ जाना है?	9. तुम्हें कहाँ जाना है?
10. मेरे को पता नहीं वह कहाँ गया?	10. मुझे पता नहीं वह कहाँ गया?
11. आपका उत्तर मुझ से अच्छा है।	11. आपका उत्तर मेरे उत्तर से अच्छा है।
12. हम हमारी कक्षा में गये।	12. हम अपनी कक्षा में गये।
13. हमारे वाला मकान खाली है।	13. हमारा मकान खाली है।
14. वह आपको और मुझ को देख भाग गया।	14. वह आप और मुझे देखकर कर भाग गया।

Unleash the topper in you

15. तुम्हारे से कोई काम नहीं हो सकता।	15. तुमसे कोई काम नहीं हो सकता।
16. हमको सबको देश पर मर मिटना है।	16. हम सब को देश पर मर मिटना है।
17. पिताजी ने मुझको कहा।	17. पिताजी ने मुझे कहा।
18. मेरे को यह रुचिकर नहीं।	18. मुझे यह रुधिकार नहीं।
19. आप और मैंने मिलकर पाए काम किया	19. आपने और मैंने मिलकर यह काम किया।
20. मेरे को दो निबन्ध लिखने हैं।	20. मुझे दो निबन्ध लिखने हैं।

8. क्रिया सम्बन्धी

सही क्रिया रूप प्रयुक्त न होने पर भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

1. मैंने तुम्हारी यहुस प्रतीक्षा देखीं।	1. मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की।
2. यह आप पर निर्भर करता है।	2. यह आप पर निर्भर है।
3. सर्वत्र आधुनिकीकरण करना ठीक नहीं।	3. सर्वत्र आधुनिकीकरण ठीक नहीं।
4. राम ने गुरुजी से प्रश्न पूछा।	4. राम ने गुरुजी से प्रश्न किया।
5. आप आम खाके देखा।	5. आप आम खाकर देखें।
6. अब तुम जाइये।	6. अब तुम जाओ। अब आप जाइये।
7. मेरे नौकर ने नौकरी त्याग दी।	7. मेरे नौकर ने नौकरी छोड़ दी।
8. वह क्या करना माँगता है?	8. वह क्या करना चाहता है ?
9. उसने मुझे गाली निकाली।	9. उसने मुझे गाली दी।
10. गत रविवार यह जोधपुर जायेगा।	10. गत रविवार वह जोधपुर गया।
11. हम रात में भोजन खाते है।	11. हम रात में भोजन करते हैं।
12. राम को यहाँ आने के लिए बोल दो।	12. राम को यहाँ आने के लिए कह दो।
13. तुम्हारे गये पर जया आई थी।	13. तुम्हारे जाते ही जया आई थी।
14. नदी पार हो गई।	14. नदी पार कर ली गई।
15. बालक मिठाई और दूध पी कर सो गया।	15. बालक मिठाई खाकर और दूध पी कर सो गया।
16. गुरु जी ने शिष्य को आशीर्वाद दिया।	16. गुरु जी ने शिष्य को आशीर्वाद प्रदान किया।
17. भीतर प्रवेश करना निरोध है।	17, प्रवेश निषेध है।
18. गाँधी जी को भुलाया नहीं जा सकता।	18. गाँधीजी को भूला नहीं जा सकता।
19. उसने क्या संकल्प लिया ?	19. उसने क्या संकल्प किया ?

9. मुहावरे के कारण

मुहावरे का सही प्रयोग न होने या उसमें पाठान्तर होने से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

1. प्रधानमंत्री ने देश का धुआँधार दौरा किया।	1. प्रधानमंत्री ने देश का तूफानी दौरा किया।
2. पानी पीकर नाम पूछना निरर्थक है।	2. पानी पीकर जात पूछना निरर्थक है।
3. प्रेम करना तलवार की नोंक पर चलना है।	3. प्रेम करना तलवार की धार पर चलना है।
4. दुश्मनों ने हथियार रख दिये।	4. दुश्मनों ने हथियार डाल दिये।
5. आजकल भ्रष्टाचार के बाजार गर्म हैं।	5. आजकल भ्रष्टाचार का बाजार गर्म है।
6. चोरी करते पकड़े जाने पर, उस पर घड़ा पानी गिर गया।	6. चोरी करते पकड़े जाने पर, उस पर घड़े का पानी गिर गया ।
7, कुसंगति से उस के तन पर कालिन पुत गई।	7. कुसंगति से उसके मुख पर कालिख पुत गई।
8. युग परिवर्तन का बीड़ा कौन उठाता है?	8. युग परिवर्तन का बीड़ा कौन थामता है ?
9. तेरी बातें सुनते सुनते मेरे कानभर गये।	9. तेरी बातें सुनते सुनते मेरेकान पक गये।
10. मेरे तो साँस में दम आ गया।	10. मेरे तो नाक में दम आ गया।

10. संयोजक शब्द सम्बन्धी

सही संयोजक शब्द नहीं लगाने पर भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

1. यदि वह रुपया, माँगता, तब मैं मैं अवश्य देता।	1. यदि वह रुपया माँगता तो अवश्य देता।
2. जैसा मोहन ने लिखा, जैसा तुम भी लिखो।	2. जैसा मोहन ने लिखा, वैसा तुम भी लिखो।
3. जय राम ने लंका में प्रवेश किया तो बन्दरों ने बहुत आनन्द मनाया।	3. जब राम ने लंका में प्रवेश किया तब बन्दरों ने बहुत आनन्द मनाया।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

4. यद्यपि उसने उद्योग किया, पर उसे सफलता नहीं मिली।	4. यद्यपि उसने उद्योग किया, तथापि उसे सफलता नहीं मिली।
5. जैसा लिखो, जैसा मोहन ने लिखा।	5. ऐसा लिखो, जैसा मोहन ने लिखा।
6. जैसा बोओगे, उसी प्रकार काटोगे।	6. जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।
7. ज्यों ही मैं पहुँचा, वह उठ गया।	7. ज्यों ही मैं पहुँचा, त्यों ही वह उठ गया ।
8. यह काम करो नहीं तो अपने घर जाओ।	8. यह काम करो या अपने घर जाओ।
9. क्योंकि वह मोटा है अतः वह धीरे चलता है।	9. क्योंकि वह मोटा है इसलिए वह धीरे चलता है।
10. आप इसी समय रवाना हो जाइये, क्योंकि आप को गाड़ी मिल जाये।	10. आप इसी समय रवाना हो जाइये । ताकि आपको गाड़ी मिल जाये।

11. अशुद्ध वर्तनी के कारण

वाक्य में प्रयुक्त अशुद्ध वर्तनी से भी वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

1. ताजमहल की सौन्दर्यता अनुपम है।	1. ताजमहल का सौन्दर्य अनुपम है।
2. महात्मा के सदोपदेश सुनने चाहिए।	2. महात्मा के सदुपदेश सुनने चाहिए।
3. कामायनी के रचियता प्रसाद है।	3. कामायनी के रचयिता प्रसाद हैं।
4. पूज्यनीय पिताजी आ रहे है।	4. पूजनीय पिताजी आ रहे हैं।
5. पधार कर अनुग्रहीत करें	5. पधार कर अनुगृहीत करें।
6. देश की दुरावस्था शोचनीय है।	6. देश की दुरवस्था शोचनीय है।
7. व्यक्ति यौवनावस्था में भूलें करता है।	7. व्यक्ति यौवन में भूलें करता है।
8. यहाँ श्रृंगार सामग्री मिलती है।	8. यहाँ शृंगार सामग्री मिलती है।
9. मन्त्री – मण्डल की बैठक आज होगी।	9. मन्त्रिमंडल की बैठक आज होगी।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

<u>लिपि</u> –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विषेशताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है।

जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :– 2 प्रकार है।

(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है। हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।

(i) ह्रस्व स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे कम समय लगता है हस्व स्वर कहलाते है।

जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)

नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – वे स्वर जिनके उच्चारण मे मुल स्वर से अधिक समय/ दुगुना समय लगता है। वे दीर्घ स्वर कहलाते है। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, (कुल संख्या –7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।

जैसे – अ^3, आ^3, इ^3, ई^3, उ^3, ऊ^3, ए^3, ऐ^3, ओ^3, औ^3,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार है)

(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर निकलती है ।

नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।

जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है।

बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)

(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।

जैसे – इ, ई, ए, ऐ

(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।

जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ , ऑ

पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना।

जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना।

जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

Unleash the topper in you

(5) **मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है।**

(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना। जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा/पूरा खुलना। जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।
जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।
(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)
(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)
(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करते मुख से बाहर निकलती है वह स्पर्श व्यंजन कहलाते है ।
स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –
(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ड्.
(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्
(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्
(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्
(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।
कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।
जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है।
कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है।
जैसे – श, स, ष, ह

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।
क्ष – ष् + अ
त्र – त् + र + अ
ज्ञ – ज् + ञ्+ अ
श्र – श् + र् + अ

व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर
(2) प्रयत्न के आधार पर

(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

स्वर – युक्त व्यंजन व उनका वर्गीकरण–

(अ) उच्चारण स्थान के आधार पर –

उच्चारण स्थान	नाम ध्वनि	वर्ग	व्यंजन	स्वर
कंठ	कंठ्य	क वर्ग	क ख ग घ ङ ह	अ आ
तलु	तालव्य	च वर्ग	च छ ज झ ञ य श	इ ई
मूर्द्धा	मूर्द्धन्य	ट वर्ग	ट ठ ड ण ड़ ढ़ ष र	ऋ
दाँत	दन्त्य	त वर्ग	त थ द ध न ल स	
ओष्ठ	ओष्ठ्य	प वर्ग	प फ ब भ म	उ ऊ
कंठ व तालु	कंठ्य–तालव्य			ए ऐ
दाँत व ओष्ट	दन्तोष्ठ्य		व	
कंठ व ओष्ठ	कंठोष्ठ्य			ओ औ
नासिक्य			ड्., ञ् ण् न् म्	

2) प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –
(i) कंपन के आधार पर
(ii) श्वास वायु के आधार पर
(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). कम्पन्न के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) **अघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वरतंत्रियो में कम्पन्न नहीं होता है अघोष कहलाते है। इसमें वर्ग का पहला,दुसरा वर्ण तथा श, स, ष आते है।

b) **घोष/सघोष :–** वे ध्वनियाँ जिनका उच्चारण करते समय स्वर तंत्रियों मे कम्पन्न होता है घोष/सघोष कहलाते है
इसमे वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण तथा य. र, ल, व, ह और सभी स्वर आते है।

(ii). श्वास वायु के आधार पर व्यंजन का वर्गीकरण

a) अल्प प्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय कम वायु बहार निकलती हो, अल्प प्राण कहलाते हैं।

b) महाप्राण :– ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण करते समय अधिक वायु की आवश्यकता होती है, महाप्राण कहलाता है।
इसमे दुसरा, चौथा वर्ण तथा श,स,ब,ह आते है।

(iii).उच्चारण के आधार पर –

इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।

a. स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
b. स्पर्श संघर्शी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
c. संघर्षी व्यंजन (4) – ष, श, स, ह
d. नासिक व्यंजन (5) – ड., ञ, ण, न, म
e. उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
f. प्रकंपित व्यंजन (1) – र
g. पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
h. संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य ("वर्ण विचार" से संबंधित)

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है।

	समानाक्षर स्वर	**संधि स्वर**
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता है, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है।

क़ – क़रीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ज़ – ज़रा
फ़ – फ़न, फ़ाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (é)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अग्रेजी भाषा से हुआ है।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान "विप्रसाद सितारे हिंद" को जाता है।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है।
- इसकी कुल संख्या चार होती है।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ)
  (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है। क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोड़ा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खड़ी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खड़ी पाई हटा दी जाती है। उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है।
  जैसे– विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है।
4. ईशत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है।
5. ईशद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (ष, श, स, ह)
6. रक्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें।

स्वर	**व्यंजन**	**कुल**
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उक्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	.क ख़ा ग़ा ज़ा .फ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते हैं।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्ध्दा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते हैं।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है।
  जैसे – पढ.ाई, लड.ाई, सड़क, पकड़ना, ढूँढना आदि।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते हैं अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

Toppersnotes
Unleash the topper in you